Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	Research Paper	Paper No. VBRP-33

समाज में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्व

डॉ. शोभा मिश्रा, *प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य, महाविद्यालय, उज्जैन, म. प्र.*
मनोहर पण्डलाय *प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन, म.प्र.।*

सारांश :– सम्पूर्ण जीव जगत् में मनुष्य जीवन को अन्य प्राणियों और वनस्पतियों से भिन्न माना जाता है। यह भी अवधारणा है कि मनुष्य जीव जगत् की सर्वोच्च विकसित जाति है। मनुष्य में सामाजिकरण की प्रवृत्ति अधिकतम पाई जाती है। इसलिए एक सामाजिक प्राणी माना जाता है। सामाजिकरण की इस प्रक्रिया में मनुष्य ने अपने लिए कुछ नियम बनाये हैं और एक संयमित जीवन के लिए स्वयं को तैयार किया। मनुष्य के जीवन में हम नियमों और संयमन का बहुत महत्व है। इनसे ही मनष्य की अपनी पहचान बनती है। किसी का अच्छा बुरा होना उसके द्वारा इन नियमों और संयमन के पालन के स्तर से निर्धारित होता है। इन्हीं ही हम जीवन के मूल्य मानते हैं। मूल्य मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं और उसे अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठ साबित करते हैं।[1]

मानव जीवन बहुत जटिल है भारत जैसे देश में सब का जीवन एक समान नहीं है। आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक विसमताऐं है। भाषा, धर्म और जाति के आधार पर मनुष्य कई खेमों में बटा हुआ है। वह अलग–अलग आस्थाओं में जीता है, परमेश्वर के भिन्न रूपों को पूजता है और अलग–अलग भाषाऐं बोलता है। उसमें एक ही बात समान रूप से लागू होती है। ये है उसके जीवन में जो हर परिस्थिति में एक समान है और जिनका निर्वहन प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसी अनुपात में आवश्यक है। मूल्यों को परिभाषित करना चिन्तकों और दार्शनिकों के लिए एक प्रिय विषय रहा है। अपनी–अपनी आस्था, परिकल्पना और अवधारणा के आधार पर विद्वानों ने मूल्यों के अलग–अलग परिभाषाऐं प्रदान की है। कुछ प्रमुख चिन्तकों द्वारा दी गई परिभाषाऐं निम्न लिखित है।

परिभाषा

श्री राधाकमल मुखर्जी के अनुसार – "मूल्य समाज द्वारा अनुमोदित उन इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किये जा सकते हैं, जिन्हें अनुवंधन, अधिगम या सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आत्मसात किया जाता है और जो व्यक्तिगत मानकों तथा अकांक्षाओं के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।

जॉन डी.वी. के अनुसार – "मूल्य का सम्बन्ध आन्तरिक रूचियों से है। परन्तु उनके लिए सामाजिक मान्यता तथा अनुमोदन को भी आवश्यक बताया है। वे यह मानते है कि सभी रूचियाँ मूल्य नहीं हो सकती है।

उक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि मूल्य हमारी आस्थाओं और सामाजिक मर्यादाओं पर आधारित आचरण के सिद्धांत है। जब हम अपने आचरण और व्यवहार को समाज के नीतिगत दायरे में लाते हैं तो हमारे मूल्य नैतिक मूल्य बन जाते हैं जो जीवन के आधारभूत मूल्यों के समकक्ष होते हैं और दोनों का आधार समान होता है। समाज के स्थापित नियमों और मानकों के अनुरूप अपने आचरण, व्यवहार और चरित्र को ढालना नैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में एक सर्वमान्य अवधारणा है।[2]

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र में द्वितीय शोध सामाग्री के आधार पर अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र की प्रविधि हेतु ज्ञानमीमांसीय तथ्यों से मूल्यों को अध्ययन किया गया हैं। सन्दर्भ ग्रन्थ हेतु पत्र–पत्रिकाओं से भी अध्ययन किया गया है।

समस्या

मूल्यों की व्याख्या त्रिस्तरीय की जा सकती है। व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर मूल्यों को निर्धारित करना और उनके निर्वहन के लिए समग्र प्रयास करना, स्वस्थ्य समाज की मूलभूत आवश्यकता है। जीवन मूल्यों को परिभाषित करते हुए उनका विस्तार से अध्ययन करना किसी भी चिन्तन से समाज के लिए प्राथमिक कार्य होना चाहिए।

जैसे–जैसे इतिहास आगे बढ़ता है। सामाजिक परिवर्तन आते हैं। वैसे–वैसे मनुष्य की जीवन शैली बहुत अधिक प्रभावित होती है। लोगों की सोच सामर्थ्य और दक्षताएँ बदलती रहती हैं।

उद्देश्य

मूल्यों का संबंध जीवन के विभिन्न पक्षों से होता है। सामाजिक सन्दर्भ में मूल्यों की अहम भूमिका होती है।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

1. पर्यावरण में सन्तुलन एवं संरक्षण मूल्यों द्वारा किया जाता है। समाज तथा पर्यावरण में सहयोग भी मूल्यों द्वारा स्थापित किया जाता है।
2. प्रजातांत्रिक मूल्यों में शक्ति, समानता, स्वतंत्रता तथा न्याय से राजनीतिक व्यवस्था निर्धारित की जाती है। शिक्षा की प्रक्रिया में इन्हें स्थान दिया जाता है।
3. सामाजिक व्यवस्था एवं स्वरूप में सहयोग, सहानुभूति, न्याय, प्रेम, स्नेह को विशेष महत्व दिया जाता है, जिससे व्यवस्था में सन्तुलन रखा जा सके।
4. आज विश्व स्तर पर मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता है। भारत ने सम्पूर्ण विश्व का एक संयुक्त परिवार माना है। जिसकी अभिव्यक्ति "वसुधैव कुटुम्बकम्" के मूल मंत्र में हुई है। इन्हीं की भौगोलिक सीमाएँ शनैः–शनैः अर्थहीन होती जा रही है। आर्थिक उदारीकरण के इस दौर में वैश्विक स्तर पर भी मूल्यों की परिभाषा तैयार करना नितांत आवश्यक हो गया है। सभी राष्ट्रों और धर्मों के लोगों के लिए समभाव, सद्भाव, आदर, स्नेह और भाईचारे के साथ शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की परिकल्पना को आत्मसात करना वैश्विक स्तर पर व्यक्ति नैतिक मूल्यों का आधार है।

समाधान

आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी परिवर्तन की इस दौड़ में शामिल हो जाती है। ऐसे अवसरों पर जीवन मूल्य संक्रमण काल से गुजरते हैं। प्रत्येक व्यक्ति समाज और राष्ट्र अपने परिवेश और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार मूल्यों को परिभाषित कर रहा है। इस कारण मूल्यों का एक समान लोक कल्याणकारी सम्भव नहीं हो पा रहा है। चारों ओर एक विरोधाभाष उत्पन्न हुआ है। जिसके कारण हमारे जीवन मूल्य संकट की ओर से गुजर रहे हैं।[3] हमारा समाज भौतिक रूप उन्नत हो रहा है। किन्तु मौलिक मूल्यों की दृष्टि से पतन शीलता की ओर अग्रसर है। यदि यह शिलसिला समाप्त नहीं हुआ तो आने वाला समय सामाजिक पतन की चरम सीमा का हो सकता है। फलस्वरूप मनुष्य के स्पष्टीकरण के स्थान पर उसका असमाजीकरण होने लगेगा। मनुष्यता के समक्ष एक विकट समस्या उत्पन्न हो जायेगी। अतः स्वार्थी स्वकेन्द्रित असामाजिक मूल्य रहित मनुष्य प्रजाति कैसे समाज और राष्ट्र का निर्माण कर पायेगी। यह सही समय है कि हम ठोस कदम उठायें मूल्यों को पुनः प्रतिस्थापित करें और शिक्षा के माध्यम से समाज को उन्नत बनाने का प्रयास करे। हमे वह याद रखना होगा की व्यक्तियों से समाज और समाज से राष्ट्र बनता है। यदि हमें एक उन्नत राष्ट्र का निर्माण करना है तो उसमें नागरिकों की आवश्यकता होगी। उत्तम नागरिक वो होते है। जिनमें मूल्यों के प्रति आस्था हो जिनका मूल्यों की श्रृंखला को शास्वत स्तर पर प्रतिष्ठित करने वाले धर्म में विश्वास हो। जो निहित कर्म को पूजा मानते हो और अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठावान हो ऐसे व्यक्तियों का निर्माण शिक्षा व्यवस्था की पहली कसौटी है। शिक्षा पाठ्यचर्या में नैतिक मूल्यों के अध्ययन को समाहित करते हुए युवा पीढ़ी में इनकी प्रतिस्थापना करना शिक्षा व्यवस्था का प्रथम दायित्व है। यह बहुत बड़ी चुनौती ही है। आज के सामाजिक और राष्ट्रीय परिवेश में अनुकरणीय आदर्श व्यक्तित्व को अभाव हो रहा है। भौतिकवाद में मानवीय संवेदनाओं को संकुचित कर दिया है। स्वहित के आगे राष्ट्रहित गौण हो गया है और बृहद् समाजवाद के स्थान पर संकीर्ण व्यक्तिवाद का बोलबाला है। ऐसी स्थिति में नैतिक शिक्षा और जीवन मूल्यों की प्रतिस्थापना को और अधिक टाला नहीं जा सकता है।

जब भी मूल्यों की बात होती है कई शब्द अलग–अलग सन्दर्भ में उपयोग में लाये जाते हैं। जैसे जीवन मूल्य, नैतिक मूल्य और मानवीय मूल्य। सम्भवतः इन सभी शब्दों के अर्थ और अभिप्राय एक ही है। मूल्य को किसी भी नाम से क्यों न पुकारा जाये वे उन गुणों की ओर इंगित करते हैं। जिन्हें व्यक्ति महत्वपूर्ण और उपयोगी मानता है। तथा जिन मूल्यों के पालन करने से व्यक्ति अपने लिए सामाजिक मान्यता प्राप्त करता है।[4]

भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन में मूल्य ही सत्य होते हैं। जीवन की शुद्ध क्रियाऐं धर्म कहलाती है। धर्म में शान्ति प्रेम और अहिंसा समाहित रहते हैं। ये पाँच तत्व सत्य, धर्म, शान्ति, प्रेम और अहिंसा मानव मूल्य माने जाते हैं। यह भी माना जाता है कि इन मूल्यों का निर्धारण धर्म करता है।

अब प्रश्न उठता है कि ऐसे मूल्यों का स्वरूप क्या है? किन गुणों के निर्वहन से हम स्वयं को नैतिक मूल्यों की कसौटी पर परख सकते हैं? इसे जानने के लिए हम अपने प्राचीनतम ग्रन्थों का सहारा ले सकते है जो इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

- भगवत् गीता, जिसे हम मानवीय संबंधो, दृष्टिकोण, दर्शन, ज्ञान और उपदेश का सर्वोत्कृष्ट और सर्वकालिक ग्रन्थ मानते हैं, उसमें 26 मानवीय मूल्यों की विवेचना की गई है। इन गुणों में निर्भीकता, मन की पवित्रता, योग ज्ञान में परिपक्वता, देने की प्रवृत्ति, स्वयं पर नियंत्रण, त्याग, शास्त्रों का अध्ययन स्पष्टवादिता, सत्य निष्ठा, क्रोध का अभाव, उत्सार्ग की अभिलाषा, शांतिप्रियता, छल कपटरहित व्यवहार, सभी के प्रति क्षमा का भाव, निस्पृहता का भाव, सभ्यता, विनम्रता, ऊर्जावान–क्षमताशील व्यक्तित्व, दृढ़ता, शुद्धता, घृणारहित–गर्वरहित स्वभाव तथा चुनौतियों का सामना करने की शक्ति–उत्तम व्यक्ति के प्रमुख गुण माने गए हैं और इन्हें मूल्य के रूप में निरूपित किया गया है।
- हमारे दूसरे सर्वमान्य धार्मिक ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण में मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण सम्पूर्ण व्यक्तित्व को परिभाषित किया गया है। यह माना गया है कि ऐसा व्यक्तित्व निम्नलिखित गुणों से आभूषित होगा–व्यक्ति जिसमें सद्गुण हो, सामर्थ्य हो, जो धर्म में आस्था रखता हो, जिसमें कृतज्ञता का भाव हो, जो सत्यवादी हो, जिसमें सशक्त

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

समर्पण का भाव हो, जिसका व्यवहार उभय हो, जिसमें सभी के प्रति करूणा हो, जो विद्वान, योग्य और प्रसन्नचित हो, स्वयं को पूर्ण रूप से जानता हो, जिसने क्रोध पर काबू पा लिया हो, जिसका व्यक्तित्व शानदार हो और जो दूसरों से न जलता हो।

इसी ग्रन्थ में मानवीय उत्कृष्ठता के मानव भी वर्णित किए गए है। समुद्र के समान व्यापक, हिमालय के समान दृढ़, विष्णु के समान शूर–वीर, चन्द्र के समान सौम्य एवं आनन्ददायक, पृथ्वी के समान धैर्यवान, कुबेर के समान दानी और धर्म के समान सत्यवादी व्यक्ति को उत्कृष्ठ व्यक्ति माना गया है।

मनु ने धर्म के दस लक्षण बताए हैं जो आज भी भारतीय सदाचार के मूल तत्व है। इनमें धैर्य, क्षमा, संयम, अस्तेय, पवित्रता, इन्द्रिय, निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य एवं अक्रोध का उल्लेख हैं यह माना गया है कि इनमें ही व्यक्ति उदात्त बनता है। इन मूल्यों को अपने अंदर विकसित करने वाला व्यक्ति ही लौकिक मूलभूत दुर्गुणों–काम, क्रोध, लोभ मोह और अहंकार आदि से बच सकता है। उदात्त बनने के प्रयत्न में सबसे पहले व्यक्ति को स्वयं को जानना होगा। अपनी प्रकृति, प्रवृत्ति, स्वभाव, अभिरूचि, अभिवृत्ति का पता लगाए। ये व्यक्ति के आंतरिक तत्व हैं। इनका बोध होने के बाद अपनी योग्यता, शक्ति, सामर्थ्य तथा सीमाओं का विचार कर लेना चाहिए क्योंकि व्यक्ति के विकास का आधार इन्हीं आंतरिक तत्वों पर निर्भर हैं आचरण व्यवहार से व्यक्ति को सदाचारी बनाने में इन आंतरिक तत्वों की भूमिका सर्वोपरि है, इसे मनु ने स्वीकार किया है।[5]

मूल्यों का महत्व एवं आवश्यकता

भारतीय जीवन मूल्यों की एक और विशेषता है– आदर्श और यथार्थ, बाह्य और आन्तरिक, धर्म और कर्म, भोग और त्याग, समाज और देश, बुद्धि और हृदय, लोक और परलोग, कर्त्तव्य और अधिकार, अर्थ और काम, मानव और प्रकृति में संतुलन और समन्वय का भाव रखना। उचित संतुलन और सही समन्वय जीवन में औचित्य का निर्धारण करता है। प्रकृति में सत्य, रज और तम् का उचित अनुपात ही प्रकृति को नियमों से परिचालित करता है। इस अनुपात में आवश्यक परिवर्तन आने पर प्रकृति विनाश की ओर जा सकती है।

भारतीय जीवन मूल्यों में कर्म की प्रधानता रही है। यह माना जाता है कि फल की कामना किए बिना कर्म करते रहना चाहिए। निष्काम कर्मयोग हमारे दर्शन का एक मुख्य वैचारिक क्षेत्र रहा है। माना जाता है कि निष्काम कर्मयोगी सामान्य दुर्गुणों से मुक्त होते हुए पूर्ण संतोष के साथ अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करता है और संभवतः एक अच्छे मनुष्य में इस प्रकार की उदात्त भावना का जन्म लेना उसके सदाचारी होने का प्रमाण है।[6]

ऊपर दिए गए गुणों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि मूल्य हमारे समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। मूल्य ही व्यक्ति को सदाचारी अथवा कदाचारी बनाते हैं। मूल्यों की सही पहचान और उनका अनुसरण हमें सामाजिक स्तर पर मान्यता प्रदान करता है।

निष्कर्ष

मूल्यों की आवश्यकता व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र तीनों को है। व्यक्ति का व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन मूल्यों पर आधारित होता है। मूल्य उन्हें नियंत्रित तथा निर्देशित करते हैं। मूल्यों की व्यवस्था और निर्वहन परिवार से प्रारम्भ होता है, जो समाज में स्थापित मानक मूल्यों पर आधारित होता है। परिवार समाज द्वारा निर्गमित एवं निर्धारित मूल्यों का पालन करते हैं। समाज ही धर्म एवं संस्कृति का निर्धारण करता है।

नैतिक मूल्यों के सम्बन्ध में सामान्य अवधारणा हैं कि इन्हें औपचारिक रूप से सिखाया या पढ़ाया नहीं जा सकता। मूल्य हमें सही जीवन की अनुभूति प्रदान करते हैं। इन्हें केवल महसूस किया जा सकता है और यह व्यक्ति के आचरण के माध्यम से परिलक्षित होते हैं। शाश्वत होते हुए भी इनका कोई स्वरूप नहीं है। यही कारण है कि नैतिक मूल्यों की शिक्षा एक कठिन चुनौती है।

किसी व्यक्ति के जीवन को संवारने में तीन संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है– परिवार, शिक्षण–संस्थाएँ और समाज। यह त्रिकोण बच्चों के समाजीकरण के साथ उनमें मूल्य स्थापित करने का कार्य भी करता है।

सन्दर्भ :–

1. **डॉ. श्यामल किशोर,** सीमान्त नैतिकता के आयाम, इम्प्रेशन पब्लिकेशन्स, पटना, बिहार, 2014, पृष्ठ 5
2. **वामन शिवराम आप्टे,** संस्कृत हिन्दी कोश, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016, पृष्ठ 373
3. **आचार्य जयदेव वेदालVार,** वैदिक दर्शन, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 1991, पृष्ठ 17
4. **उपनिषद्–अV,** गीताप्रेस, गोरखपुर, 2064, पृष्ठ 170
5. **डॉ. वन्दना सिंह, एवं सुदर्शन चौहान,** मानवीय विकास के विविध आयाम, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2001, पृष्ठ 201
6. **सत्यकाम विद्यालंकार,** चरित्र–निर्माण, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1975, पृष्ठ 16